DATE 5.8.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School Sec. 33-B, Chandigarh.

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ-8 'लता से साक्षात्कार'
(साक्षात्कार)-1
पुस्तक- नवतरंग भाग-8

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

आज हम कक्षा आठवीं के पाठ-8 'लता से साक्षात्कार' को पढ़ेंगे। यह कार्य आपको 5.8.24 को भेजा जा रहा है।

सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-63 खोलकर रखें साथ ही अभ्यास-पुस्तिका भी खोलकर रख लें। मैं पाठ पढ़ाते समय बीच-बीच में से कुछ प्रश्न पूछती जाऊँगी। सब बच्चे प्रश्न सुनकर तीन मिनट का समय लेकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

पाठ का सारांश:- लता मंगेशकर भारत की भारतरत्न हैं। इन्हें भारतरत्न से सम्मानित किया गया है। लता जी के विषय में कुछ कहना सूर्य को दिया दिखाना है। वे विश्व प्रसिद्ध गायिका हैं। लता मंगेशकर पिछले 70 वर्षों से भी अधिक समय से लगातार गा रही हैं। ये अब तक हजारों गीत अनेक भाषाओं में गा चुकी हैं। इनकी आवाज़ का कोई सानी नहीं। लता जी बेहद शांत स्वभाव की हैं। संगीत उन्हें विरासत में मिला है। प्रस्तुत पाठ एक साक्षात्कार के रूप में है। लता जी स्वयं बता रही हैं कि उन्हें सफलता पाने के लिए कैसा और कितना संघर्ष करना पड़ा, तब जाकर वे सफल हुईं।

इस साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता ने स्वर कोकिला, स्वर सम्राज्ञी कही जाने वाली लता मंगेशकर जिनके गले में साक्षात् सरस्वती विराजमान हैं, उनका स्वागत

Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ-8 'लता से साक्षात्कार'

किया उन्हें बताया कि आपसे और आपकी आवाज़ से सारे संसार को प्यार है। साथ ही उसने उनके अस्सीवें जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और कहा, 'आप ऐसे ही गाती रहें, और हम लोगों के दिल जीतती रहें।' बधाई के उत्तर में लताजी ने उन्हें धन्यवाद कहा।'

प्रश्नकर्ता ने उनसे पूछा कि आपका संगीत से संबंध दो तरह से है। जो आपके खून और घुट्टी दोनों में है। जिस माहौल में आप पली-बढ़ी हैं, जिस पिता की आप पुत्री हैं, वहाँ संगीत ही संगीत था, तो बचपन की किस उम्र में पहली बार आपको यह महसूस हुआ कि आप गा सकती हैं!

लताजी ने बताया कि हमारा परिवार मराठी ब्राह्मण है। पिताजी जाने-माने संगीतज्ञ, संगीतकार, शास्त्रीय गायक, थियेटर एक्टर थे। उनकी ड्रामा कंपनी थी और रिहर्सल आदि में गाने ज़्यादा होते थे। मैं हमेशा गाने सुनती थी पर पिता के सामने नहीं गाती थी। हमारे घर का रसोईघर बड़ा था। वहाँ बर्तन रखने का स्टैंड था। मैं उस पर चढ़कर बैठती थी और माँ अगर कुछ बना रही होतीं, तो मैं उसको अपना गाना सुनाया करती थी, तब मेरी माँ कहती थी- 'तू सर मत खा मेरा, चली जा यहाँ से।' मेरे पिता को पता ही नहीं था कि मैं गा सकती हूँ। पिताजी औरों को संगीत सिखाते थे।

बच्चो! अब मैं यहाँ प्रश्न पूछूँगी आप तीन मिनट का अंतराल लेकर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1. लता मंगेशकर को हम किस कारण से जानते हैं?
प्रश्न-2. लताजी अपनी माँ को कहाँ बैठकर गाना सुनाती थीं?
प्रश्न-3. वे कितने वर्ष की हो चुकी हैं?
प्रश्न-4. उनके पिताजी कौन थे? वे क्या काम करते थे?

बच्चो! आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। आशा है पूछे गए प्रश्नों के उत्तर आपने लिख लिए होंगे। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:—

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 5.8.24
PAGE No. 3

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य पाठ - 8 'लता से साक्षात्कार'

उत्तर-1. भारतरत्न से सम्मानित स्वर कोकिला के नाम से जगत्प्रसिद्ध लता मंगेशकर को उनकी गायकी के कारण जाना जाता है।

उत्तर-2. लताजी घर की रसोईघर में बर्तन रखने के स्टैंड पर बैठकर अपनी माँ को अपने पिताजी और सहगल साहब के गाने सुनाया करती थीं।

उत्तर-3. साक्षात्कार के समय लताजी की आयु अस्सी वर्ष थी लेकिन आज की तारीख में वे ९। वर्ष की हैं। उनका जन्म २८ सितंबर १९२९ को हुआ था।

उत्तर-4 उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर थे। वे संगीतज्ञ, एक्टर, शास्त्रीय गायक थे और उनकी ड्रामा की कंपनी थी। संगीत का मंदिर था उनका घर।

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं। एक बार जब लताजी सिर्फ पाँच वर्ष की थी तो उनके पिताजी किसी को संगीत का रियाज़ करवा रहे थे। वे लता गैलरी में खेल रही थीं। अचानक उनके पिताजी रियाज़ करने वाले को रियाज़ करने के लिए कहकर कहीं चले गए। रियाज़ करने वाले का गाना लताजी को अच्छा नहीं लगा और वे उसे गाकर बताने लगीं। तभी उनके पिताजी आ गए। उन्होंने यह सब सुन लिया था। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वे दुनिया को संगीत सिखा रहे हैं लेकिन गायक तो उनके अपने घर में ही मौजूद है। अगले दिन उन्होंने लताजी को सुबह छह बजे उठाया और कहने लगे - तानपूरा उठाओ और बैठो मेरे पास। वे उस समय बहुत छोटी थीं। जो चीज़ रात को लताजी ने उस लड़के को सिखाई थी, वही चीज़ उन्होंने (राग) 'स्टार्ट' किया। बस तभी से लताजी ने गाना अपने पिताजी से सीखना आरंभ किया।

प्रश्नकर्ता की बातों का जवाब देते हुए लताजी

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 5.8.24
PAGE No. 4

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य पाठ - 8 'लता से साक्षात्कार'

ने कहा कि जब मैं नौ साल की थी तब कुछ लोग मेरे पिताजी के पास आए। उन्होंने कहा कि दीनानाथ राव, हम लोग चाहते हैं कि आपका एक 'क्लासिकल प्रोग्राम' इसी थियेटर में करें। बाबा ने कहा - ठीक है, करो। उनके जाने के बाद मैं बाबा के पास गई और उन्हें कहा कि मैं भी गाना चाहती हूँ। उन्होंने कहा - तू क्या गाएगी? तू तो छोटी-सी है। तुझे तो गाना भी नहीं आएगा। मैंने कहा - मैं गाऊँगी ज़रूर। तब पिताजी ने मुझसे पूछा कि कौन-सा राग गाएगी? पिताजी उन दिनों खंबावती राग सिखा रहे थे इसलिए खंबावती राग का नाम लेने पर वे मान गए। उस प्रोग्राम में पिताजी ने पहले मुझे गाने को कहा। मैं जाकर गाना गाने बैठी और गाना गाया। मेरा गाना लोगों को बहुत पसंद आया। यह शो रात में हुआ था। मेरे गाने के बाद पिताजी आए और गाना गाने बैठे। जब वे गा रहे थे तो मैं उनकी गोद में सिर रखकर सो गई। नौ साल की आयु में यह मेरा पहला प्रोग्राम था।

बच्चो! इस पाठ को हम यहीं समाप्त करते हैं। इस पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह भेजा जाएगा। शेष भाग अगले सप्ताह ----।

अब मैं गृहकार्य देने जा रही हूँ। सब बच्चे ध्यान से कार्य को करेंगे। समझेंगे।

गृहकार्य :- सब बच्चों को द्वितीय इकाई परीक्षा का पाठ्यक्रम प्राप्त हो गया है। एक-एक विषय को चुनकर अभ्यास करेंगे व याद करेंगे। इस पाठ को उच्च स्वर में पढ़ेंगे। इससे पाठ आसानी से समझ में आ जाएगा।

(अंतिम पृष्ठ - 4)

Scanned with CamScanner